प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर

निर्देशिका

रूप क्रमांक 2
(देखिये नियम 7)
मध्य प्रदेश शासन

सोसायटी के रजिस्ट्रीकरण का प्रमाण पत्र

क्रमांक **06/09/01/15303/25**

यह प्रमाणित किया जाता है कि **"प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन"**,सोसायटी जो **"53/1 , पिपरिया धर्मश्री मार्ग"** तहसील **सागर** जिला **सागर** में स्थित है, मध्यप्रदेश सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1973 (क्रमांक 44 सन् 1973) के अधीन तारीख **11 फरवरी 2025** को रजिस्ट्रीकृत की गई है।

Signature valid
Signed by: Assistant Registrar
on 11-02-2025 11:32:16

दिनांक 11 फरवरी 2025

सोसायटियों के रजिस्ट्रार

प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर

निर्देशिका

अध्यक्ष
डॉ. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार', दमोह

प्रकल्पना एवं संयोजन
डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर

प्रकाशक
प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.)
सागर, मध्यप्रदेश

प्राकृतश्री- 11

कृति : **प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर निर्देशिका**

अध्यक्ष : डॉ. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार'

संयोजन : डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़-सागर

साज-सज्जा : अभिषेक कुमार जैन शास्त्री, सागर

संस्करण : प्रथम, वी.नि.सं. 2551, वि.सं. 2081, सन् 2025

आवृत्ति : 1000

ISBN : 978-81-986457-9-1

प्राप्ति स्थल : डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़-सागर
154, गीतांजलि ग्रीनसिटी, संजय ड्राइव रोड
सागर-470002 (म.प्र.) 9329092390

डॉ. आशीष कुमार जैन, बम्हौरी
सहायक प्राध्यापक, एकलव्य विश्वविद्यालय
दमोह (म.प्र.) 9685846161

WEBSITE- www.prakritbhasha.com
EMAIL- prakritfoundation25@gmail.com

प्रकाशक : **प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.)**
सागर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

- ❑ प्राकृत भाषा का वैशिष्ट्य 4
- ❑ वर्तमान में प्राकृत भाषा का महत्त्व 7
- ❑ शिविर की महत्ता और आवश्यकता 9
- ❑ शिविर के उद्देश्य 10
- ❑ शिविर की दिनचर्या 10
- ❑ शिविर पद्धति 10
- ❑ कार्यविधि 10
- ❑ प्राकृत शिविर की आवश्यकता क्यों? 11
- ❑ शिविर की विशेषताएँ 11
- ❑ शिविर हेतु आवश्यक व्यवस्थाएँ 12
- ❑ संयोजक के उत्तरदायित्व 12
- ❑ प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन के अध्यापक विद्वान् 13
- ❑ समाज के उत्तरदायित्व 13
- ❑ स्थानीय संयोजक के उत्तरदायित्व 13
- ❑ अध्यापक विद्वान् के आवास की व्यवस्था 13
- ❑ शिविर उद्घाटन समारोह- प्रारम्भिक व्यवस्थायें 14
- ❑ उद्घाटन कार्यक्रम आयोजना 14
- ❑ शिविर दिनचर्या 14
- ❑ स्थानीय समापन समारोह 14
- ❑ सांस्कृतिक कार्यक्रम 15
- ❑ रचनात्मक गतिविधियाँ 16
- ❑ शिविर में पढ़ाये जाने वाले विषय 16
- ❑ परीक्षा आयोजन 16
- ❑ मूल्यांकन 16
- ❑ प्रश्न पत्र का ब्लू प्रिंट 17
- ❑ जैनागम की मूल भाषा 17
- ❑ प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन समिति (रजि.) के उद्देश्य 18
- ❑ प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन के सदस्यों की सूची 21
- ❑ समाज स्वीकृति फॉर्म 23
- ❑ शिविरार्थी फॉर्म 24

प्राकृत भाषा का वैशिष्ट्य

प्रस्तावना –

भाषा भावों को उद्घाटित करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। भाषा में बोली, ध्वनि, संकेत आदि के माध्यम सहज हैं। सभी भाषाओं का अपना रस और आनंद है। भाषाओं की मधुरता उनमें प्रयोग किए जाने वाले शब्द हैं, जिनसे मधुरता भी आती है और कर्कशता भी आती है। शब्दों के अर्थ अनेक बार क्षेत्रीय बोलियों के अनुरूप भी परिवर्तित हो जाते हैं। ऐसे में, हमें आवश्यक होता है कि हम शब्दों की समीचीन व्युत्पत्ति, उनके अर्थ और प्रयोग को जाने।

भारत भाषाओं का समृद्ध देश है। जहाँ भाषाओं की विविधता शब्दों के मधुर अर्थों और ध्वनियों को देनी वाली है। जिस प्रकार से प्रत्येक कार्य का एक मुख होता है, प्रत्येक ध्वनि का मुख होता है, प्रत्येक जीवन का मुख होता है, प्रत्येक मार्ग का प्रवेशद्वार होता है वैसे ही भाषाओं का कोई न कोई मुखद्वार जरूर होना चाहिए। मुखद्वार वही है जो सहज हो, जो स्वयमेव निःसृत हो, जिसके लिए सीखना न पड़े स्वयमेव ही सीखकर बोलना, समझना प्रारंभ कर दें।

जैन दर्शन कहता है कि तीर्थंकर भगवान की वाणी ध्वनि रूप होती है। जिसमें समाहित बीजपद से ज्ञान का विस्तार होता है। यह विषय स्पष्ट है कि ध्वनि से ही भाषाओं का और बोलियों का सृजन हुआ है। हम पशुओं में देखते हैं, उनके पास सिर्फ ध्वनि है, बोली और भाषा नहीं है। वे जानते हैं और समझते हैं। जंगलों में जाने वाले लोग भाषा या बोली का प्रयोग नहीं करते हैं विभिन्न ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। प्रत्येक कार्य के लिए ध्वनियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं।

इन्हीं ध्वनियों सहज रूप से बोलियाँ निकली हैं। इन्हीं बोलियों में प्राकृत नाम की एक क्षेत्रीय बोली है। जो अपने विस्तृत स्वरूप में है। प्राकृत ने बोली से आगे बढ़कर भाषा का रूप लिया है। प्राकृत ने बड़ी सहजता रखी। विभिन्न प्रान्तों और क्षेत्रों की ध्वनियों को सम्मिलित करते हुए शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, पैशाची आदि में विस्तार किया। इन सभी में साहित्य की खूब सृजना हुई है। प्राकृत भाषा भारत की नसों में वह रही है। अवहट्ट, अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी, बंगला, पंजाबी, असमिया, उड़िया आदि में प्राकृत भाषा का अविरल स्वरूप परिलक्षित है। मान्यताएँ कुछ भी हों, परंतु सत्यता इस बात की द्योतक है कि प्राकृत भाषा ने बोलियों को

समृद्ध किया है और जनमानस को शब्दों का असीमित भण्डार प्रदान किया है। कई लाख शब्द प्राकृत भाषा में है, जो अन्य किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं है। यह प्राकृत भाषा राष्ट्र का गौरव है। इसी गौरव को भारत सरकार ने हाल ही में शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करके अधिक गौरवशाली बना दिया है।

संस्कृत भाषा को छोड़ दें, तो प्रायः अनेक भाषाओं में एकवचन और बहुवचन दो ही वचनों की अवधारणा निहित है। हिन्दी, बंगला, मराठी आदि में प्राकृत भाषा की तरह दो ही वचन हैं। इससे सहज स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं इन भाषाओं का सीधा संबंध प्राकृत से हैं।

जो जो बोला गया है, उसके शब्दों को जोड़ा गया है, उसके प्रयोगों को बनाया गया है। अर्थात् बोली से भाषा तक का सफर किया है न कि भाषा से बोली का सफर; क्योंकि बोली सहज होती है बंधी हुई नहीं होती है। समझ विकसित होती है। जिस भाषा को पहले तैयार किया जाता है फिर बोली का रूप मिलता है ऐसी स्थति में शब्दों का भण्डार निश्चित होने से उनका सहज प्रयोग नहीं हो पाता है।

भारत के प्रान्तों की भाषा और बोलियों का स्वरूप यदि देखा जाए तो जितने भी देशज शब्द हैं, उनमें प्राकृत की ही पुट सम्मिलित हैं। इसलिए प्राकृत को अत्यंत सहज और सरल कहा गया है। प्राकृत भाषा के वैशिष्ट्य को समझने के लिए यहाँ हम परिचर्चा करते हैं।

प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ - प्राकृत शब्द प्रकृति से बना है। प्रकृति की व्युत्पत्ति है - **प्र + कृ + क्तिन्** अर्थात् प्र उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से क्तिन् प्रत्यय होने से प्रकृति बना है। **प्रकृतेः आगतम्** इस व्युत्पत्ति के आधार पर प्राकृत बना है। जिसका अर्थ प्रकृति से उत्पन्न, नैसर्गिक, स्वभाव। **प्रक्रियते यया सः प्रकृतिः** अर्थात् जिससे दूसरे पदार्थों की उत्पत्ति हो।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति और विकास - प्राकृत भाषा की उत्पत्ति जनसामान्य के बोलचाल से ही हुई है। जनसामान्य में जो बोला गया; कालान्तर में उसे भाषा के रूप में ग्रहण कर लिया गया और वही प्राकृत है। प्राकृत भाषा के रूप में विकसित हुई, न कि भाषा से बोली बनी है। बल्कि बोली से भाषा बनी है।

भारतीय संस्कृति में वेदों का बहुत महत्त्व है। वेदों की प्रामाणिकता एवं काल के संदर्भ में अनेक विद्वानों के अभिमतों में ऊहापोह है। फिर भी, वेदों की रचना कब

हुई? किसने की? क्यों की? यह प्रसंग नहीं है। यहाँ प्रसंग भाषा का है। इसलिए उसके ही संदर्भ में कह रहे हैं। वेदों की भाषा छान्दस् है। छान्दस् न तो संस्कृत है और न ही प्राकृत है। वेदों में प्रयुक्त शब्द इस बात के द्योतक हैं कि जनसामान्य की भाषा का वहाँ भी ध्यान रखा गया है। प्राकृत भाषा के लिए छान्दस् और छान्दस् के लिए प्राकृत एवं दोनों के लिए भाषा विकास का सीधा संबंध है। इसलिए प्राकृत की उत्पत्ति का कोई मूल नहीं है। फिर भी इसकी उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक मत हैं, वाक्पतिराज का कथन है–

सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं ॥

प्राकृत को बहता नीर और संस्कृत को बद्ध महासरोवर कहा है। प्राकृत और संस्कृत दोनों में छान्दस् के तत्त्व विद्यमान है। छान्दस् स्रोत से प्रवाहित होने पर एक वृद्धा कुमारी बनी रही और दूसरी कुमारी युवती। तात्पर्य यह है कि संस्कृत पुरानी होती हुई भी सदा मौलिक रूप धारण करती है, इसके विपरीत प्राकृत चिर युवती है, जिसकी संतानें निरंतर विकसित होती जा रही हैं। संस्कृत को कूपजल और प्राकृत को बहता नीर कहा गया है।

जैनागम की मूल भाषा–

जैनाचार्यों ने अपने मूल ग्रन्थों का लेखन प्राकृत भाषा में किया है। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में प्राकृत में ही लेखन बहुलता में प्राप्त है। आचार्यश्री पुष्पदंत–भूतबलि महाराज ने आज से दो हजार से अधिक वर्ष पूर्व षट्खण्डागम ग्रन्थ की रचना की, जो प्राकृत भाषा का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसके पश्चात् समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, गोम्मटसार, द्रव्यसंग्रह आदि अनेक प्राकृत ग्रन्थों का लेखन किया गया। प्राकृत भाषा में संस्कृत साहित्य के कवियों कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्राकृत भाषा का बहुलता के साथ प्रयोग किया है। मृच्छकटिकम् में भी प्राकृत शब्दों का बहुलता के साथ प्रयोग है। लोक साहित्य में प्राकृत भाषा का सट्टक ग्रन्थ कर्पूरमंजरी, रावणवध, कंसवहो, गाहासप्तसई, वज्जालग्ग आदि अनेक ग्रन्थ हैं।

वर्तमान में प्राकृत भाषा का महत्त्व

वर्तमान में प्राकृत भाषा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व है। प्राकृत भाषा भारत देश की प्रथम बोले जाने वाली भाषा है। जिसका प्रयोग जन-जन में सहजता के साथ के किया जाता है और जिसके पुट आज भी सभी भाषाओं में विद्यमान हैं। पश्चात् प्राकृत भाषा में धार्मिक एवं लोक साहित्य की भी रचना हुई। जिनका प्रभाव भारतीय संस्कृति पर दिग्दर्शित होता है।

1. **साहित्यिक महत्त्व**- प्राकृत भाषाओं में अनेक महत्त्वपूर्ण धार्मिक और साहित्यिक ग्रंथ लिखे गये हैं। जैन साहित्य में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, समयसार, आचारांग सूत्र आदि, बौद्ध साहित्य में सुत्तनिपात आदि, संस्कृत साहित्य के प्रायः सभी ग्रन्थों में प्राकृत भाषा को लोक भाषा एवं सुन्दर-सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग किया गया है। सट्टक की अवधारणा केवल प्राकृत भाषा में है।
2. **भाषा विकास में योगदान**- प्राकृत भाषाएँ आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास का आधार रही हैं। प्राकृत से अपभ्रंश, अवहट्ट, हिंदी, मराठी, बंगला, असमिया, उड़िया, गुजराती जैसी भाषाओं के विकास में प्राकृत भाषा का योगदान महत्त्वपूर्ण है।
3. **शैक्षणिक महत्त्व**- विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में प्राकृत भाषाओं का अध्ययन किया जा रहा है। भारतीय प्राचीन ग्रंथों और धर्मशास्त्रों को समझने के लिए प्राकृत भाषा का ज्ञान जरूरी है। इसलिए आज भारत सरकार द्वारा शास्त्रीय भाषा के रूप में प्राकृत को सम्मिलित किया गया है।
4. **संस्कृति और धरोहर संरक्षण**- प्राकृत भाषाएँ भारतीय संस्कृति और वैभव को समझने का एक महत्त्वपूर्ण साधन हैं। पुरातात्विक महत्त्व की सामग्री, जैसे शिलालेख, प्राचीन सिक्के और साहित्यिक रचनाएँ प्राकृत में मिलती हैं, जो भारत के ऐतिहासिक और सामाजिक विकास को समझने में सहायता करती हैं।
5. **लोकभाषा के रूप में** - प्राचीन भारत में प्राकृत को जनसाधारण की भाषा माना जाता था, जबकि संस्कृत विद्वानों और शासकों की भाषा थी। प्राकृत का उपयोग नाटक और काव्य में भी होता था, जैसे कि कालिदास के नाटकों में विभिन्न पात्रों द्वारा अलग-अलग प्राकृत भाषाओं का उपयोग दिखाया गया है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि यह जन सामान्य की भाषा थी और विभिन्न क्षेत्रों में इसके अलग-अलग रूप प्राप्त थे।

6. **भाषाई विविधता और क्षेत्रीय भाषाओं पर प्रभाव** – प्राकृत भाषा में विविधता में एकता विद्यमान है। शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची आदि में ध्वनि के भेद हैं, कुछ परिवर्तन क्षेत्र और वातवारण के अनुसार हुए हैं परंतु सभी हैं प्राकृत ही। इनका प्रभाव आज की आधुनिक भारतीय भाषाओं जैसे मराठी, गुजराती, हिंदी और बंगाली पर पड़ा। क्षेत्रीय भाषाओं की संरचना, व्याकरण और शब्दावली में प्राकृत का योगदान स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
7. **पुरातात्विक महत्त्व** – प्राकृत भाषा में लिखित शिलालेख, सिक्के और अभिलेख पुरातात्विक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, अशोक के शिलालेख प्राकृत में हैं, जिससे उस समय के प्रशासनिक और सामाजिक जीवन की जानकारी मिलती है। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि प्राकृत भाषा का उपयोग प्राचीन भारत में शासकीय और धार्मिक संदेशों को आम जनता तक पहुँचाने के लिए किया जाता था।
8. **नाट्यकला और रंगमंच में उपयोग** – प्राचीन भारतीय नाटकों में प्राकृत भाषा का विशेष स्थान था। संस्कृत नाटकों में उच्च वर्ग के पात्र संस्कृत बोलते थे, जबकि सामान्य या निम्न वर्ग के पात्र प्राकृत बोलते थे। यह दर्शाता है कि प्राकृत भाषा किस प्रकार से सामाजिक वर्गों में विभाजित थी और इसे जनमानस की भाषा माना जाता था।
10. **शोध और पुनरुद्धार** – आज भी प्राकृत भाषाओं पर शोध जारी है। कई भाषाशास्त्री और पुरातत्वविद् प्राकृत के महत्त्व को समझने और इसके साहित्य को पुनर्जीवित करने के प्रयास में लगे हुए हैं। विश्वविद्यालयों और अनुसंधान केंद्रों में प्राकृत के अध्ययन को लेकर रुचि बढ़ रही है।

इन सभी कारणों से, प्राकृत भाषा का महत्त्व आधुनिक काल में भी बना हुआ है और इसे भारतीय इतिहास, संस्कृति, धर्म और भाषाविज्ञान के अध्ययन के लिए आवश्यक है।

शिविर की महत्ता और आवश्यकता

ज्ञान समान न आन जगत् में, सुख को कारण।
यह परमामृत जनम जरा, मृत रोग निवारण ॥

जिनागम में स्वाध्याय को परमतप कहा गया है। आचरण भी परमतप है। स्वाध्याय और आचरण जीवन को उन्नत बनाते हैं इसलिए स्वाध्याय की ओर रुचि जाग्रत करने में शिविर का विशेष महत्त्व है। वर्तमान में, भौतिकवादी एवं व्यवसायीकरण-समाजीकरण के युग में स्वाध्याय की परम्परा अनवरत नहीं है, जिससे वर्तमान पीढ़ी दिग्भ्रमित हो रही है।

इसको देखते और समझते हुए दिगम्बर जैनाचार्यों और साधुओं प्रेरणा से इन शिविरों में जैन धर्म का प्रारंभिक एवं आवश्यक ज्ञान कराया जाता है। और वहीं उचित वातावरण निर्मितकर सदाचार एवं नैतिकता के संस्कार दृढ़ किए जाते हैं।

शिविर एक सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें सामूहिक दृढ़ संकल्प के साथ-साथ समय एवं सीमित संसाधनों द्वारा ज्ञान और आचरण की प्रेरणा कर प्रभावना की जाती है। इन शिविरों में आधुनिक भाषा शैली में प्रशिक्षित सुयोग्य शास्त्री विद्वानों द्वारा निःस्वार्थ भाव से अध्यापन का कार्य करवाया जाता है। समयप्रतिबद्धता, अनुशासन, सादगी एवं शालीन व्यवहार शिविर की अपनी एक विशेषता है।

शिविर के पाठ्यक्रम में जहाँ शिक्षा के सिद्धान्तों एवं मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का समावेश है तो वहीं शिक्षण पद्धति में शिक्षण के साथ सामूहिक प्रार्थना, योग, पूजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम शिविर के विशेष आकर्षण हैं।

जैन-धर्म के प्रारम्भिक ज्ञान के साथ-साथ सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति दृढ़ आस्था, श्रावक के षट्-आवश्यकों को पालने की पृष्ठभूमि तैयार करना और संस्कारों का बीजारोपण करना ये शिविर की समस्त गतिविधियों में अन्तर्निहित उद्देश्य हैं।

सुसंस्कारित करने के लिए शिविर वह सस्ता, सुन्दर और टिकाऊ माध्यम है जो समाज को सत्यं-शिवं-सुन्दरं का दर्शन कराता है इसलिए समाज से निवेदन है कि अपने नगर, कस्बे, गाँव में सामाजिक समरसता का वातावरण निर्माण कर शिविर को लगाने की पहल करें और समाज को नई गतिविधि से जोड़कर श्रमण-संस्कृति की प्रभावना में सहभागी बनें।

शिविर के उद्देश्य-

- ❑ गुम होती नैतिकता को पुनः स्थापित करना।
- ❑ विलुप्त होती आगम परम्परा को सुरक्षित बनाना।
- ❑ नष्ट होते संस्कारों को पुनर्जीवित करना।
- ❑ व्यसन मुक्त जीवन एवं आदर्श समाज की संरचना।
- ❑ सामूहिक पारिवारिक एकता, सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय, धार्मिक और सांस्कृतिक भावना का विकास करना।
- ❑ श्रमण संस्कृति और श्रावक संस्कृति की मर्यादा के महत्त्व को स्थापित करना।
- ❑ धार्मिक रुचि जाग्रत करना।

शिविर की दिनचर्या-

प्रातः – प्रार्थना, योग, पूजन एवं कक्षायें।
दोपहर – स्वाध्याय एवं कक्षायें एवं प्रतियोगितायें।
सायं – आरती, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।

शिविर पद्धति-

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन द्वारा समाज के लिखित आमंत्रण पर शिविर लगाये जाते हैं। समाज का पत्र मिलने के बाद विवरण पत्रक भेजा जाता है, जिसके माध्यम से शिविर लगाने हेतु सर्वेक्षण कराया जाता है। शिविर अवधि सात दिन से दस दिन तक की होती है।

शिविर में प्राकृत बाल शिक्षा, प्राकृत विज्ञान भाग-1, प्राकृत विज्ञान भाग-2, द्रव्यसंग्रह, गुणस्थान विज्ञान, सल्लेखना विज्ञान, समयसार, प्रथम एवं द्वितीय भाग, छहढाला, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नकरण्ड-श्रावकाचार, रयणसार आदि के साथ पूजन विधि का योग्य व कुशल विद्वानों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। शिविर में पेन, कापी, बेच, प्रमाण पत्र, बेग तथा पुस्तकों की व्यवस्था **प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन** द्वारा की जाती है।

कार्यविधि-

- ❑ शिविर के दौरान प्रथम दिन उद्घाटन होता है।
- ❑ शिविर के अन्तिम दो दिवस में परीक्षा, परिणाम एवं पुरस्कार वितरण किया जाता है।
- ❑ **शिविर में सभी आयु वर्ग के लोग सम्मिलित हो सकते हैं।**

- ❑ स्थानीय समापन समाज को करना होता है। जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि स्थान प्राप्त शिविरार्थियों को पुरस्कृत करना, प्रशिक्षक विद्वानों का सम्मान आदि स्थानीय समाज के द्वारा किया जाता है।

स्थानीय समापन समारोह के अलावा एक सामूहिक शिविर समापन समारोह का आयोजन भी किया जा सकता है, जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त शिविरार्थियों एवं विशेष सहयोग देने वालों तथा प्रशिक्षक विद्वानों का सम्मान **प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन** एवं शिविर समिति तय करती है। शिविर के दौरान वरिष्ठ विद्वानों एवं पदाधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण भी किया जाता है।

प्राकृत शिविर की आवश्यकता क्यों?

णमोकार महामंत्र प्राकृत भाषा में निबद्ध है। प्रायः जैनागम के ग्रन्थों का प्रणयन प्राकृत भाषा में किया गया है। भारत की अनेकानेक भाषाएं प्राकृत से ही निःसृत हुई हैं। भारत सरकार ने भी प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया है। प्राकृत भाषा ही एक मात्र साधन है जो हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः प्राकृत भाषा का शुरूआती ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। प्राकृत की भक्तियाँ, स्तुतियाँ, समयसार आदि ग्रन्थ प्राकृत में ही है। अतः यह शिविर आप सभी के लिए अत्यंत उपयोगी है। आईये! आप और हम प्राकृत भाषा सीखने के लिए शिविर से जुड़ें और अन्य को भी प्रेरित करें।

शिविर की विशेषताएँ-

- ❑ सर्वश्रेष्ठ और विविध कौशल सम्पन्न विद्वानों द्वारा अध्यापन।
- ❑ बच्चों को संस्कार देने वाली शिक्षा।
- ❑ प्राकृत भाषा का शिक्षण एवं प्रशिक्षण।
- ❑ जैन धर्म के सामान्य ज्ञान और विशिष्ट ज्ञान से जोड़ने वाली शिक्षा।
- ❑ पूजन प्रशिक्षण।
- ❑ ज्ञान-ध्यान-आराधना की विशेष कक्षाएँ।
- ❑ वरिष्ठ विद्वानों का समय-समय पर मार्गदर्शन।
- ❑ पाठशाला शिक्षकों को रोचक विधि से पढ़ाने की कार्ययोजना।
- ❑ पुरस्कार, सम्मान और जीवन की फलश्रुति प्रदान की करने वाली विशेषताओं के साथ।

शिविर हेत आवश्यक व्यवस्थाएँ

सामान्य	बैनर	प्रिंटिंग	अन्य	पुरस्कार, सम्मान
1. विद्वत्गण	1. समापन	1.पत्रिका	1. बैग	1. शिविरार्थियों हेतु
2. संगीतकार	2. शिविरस्थान	2. फोल्डर	2. पॉलीथिन	2. विद्वानों हेतु
3. पुजारी	3. स्वागत-अभिनन्दन	3. स्टीकर	3. कॉपी	3. आमंत्रित-अतिथि
4. प्रतिष्ठाचार्य	4. समितिसदस्य	4. पम्पलेट	4. पेन	4. आमंत्रितविद्वान्
5. पुस्तकें	5. कार्यक्रम रूपरेखा		5. प्रमाणपत्र	
			6. प्रशस्तिपत्र	
			7. फाइल	
			8. उपस्थितिपत्रक	
			9. प्रतियोगितापत्रक	

संयोजक के उत्तरदायित्व-

1. शिविर स्थल के अध्यक्ष एवं मंत्री से संपर्क करना। तत्पश्चात् वहाँ के स्थानीय प्रमुख सज्जन लोगों से सम्पर्क करना।
2. समाज में चल रही पाठशाला की जानकारी प्राप्त करना एवं अध्यापकगण से सम्पर्क साधना। साथ में उन अध्यापकगण का फोन नं. भी नोट करना।
3. स्थानीय स्तर पर एक पुरुष संयोजक और एक महिला संयोजक आवश्यक रूप से बनाना। यदि संयोजक पाठशाला के अध्यापक या कोई सक्रिय कार्यकर्ता हो तो उत्तम रहेगा।
4. कम से कम समाज के 20 प्रमुख लोगों से सम्पर्क करना एवं शिविर की सम्पूर्ण जानकारी देना।
5. शिविर स्थल पर संतोषजनक जबाब न मिलने पर हताश नहीं होना।
6. जिस स्थान पर जाओ वहाँ किन-किन से मिले एवं क्या-क्या चर्चा हुई? उसको नोट करके रखना साथ-साथ यदि कोई शिविर हेतु मार्गदर्शन देता है तो उसे अवश्य नोट करें।
7. खाली कॉपी-पेन अवश्य साथ में रखे। बिना पेन कॉपी कहीं न जाये।
8. फोन द्वारा यदि किसी से सम्पर्क करते हैं तो कृपया इस बात का ध्यान रखें कि किस तिथि में उनसे बात की है और किसने बात की एवं क्या बात हुई है? ये सब नोट करें।

9. संयोजक द्वारा ही अध्यापक विद्वान् की व्यवस्था, पम्पलेट, बैनर आदि प्रचार सामग्री एवं समस्त उत्तरदायित्व निर्वहन किया जाना सुनिश्चित है।

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन के अध्यापक विद्वान्

- ❑ श्रमण संस्कृति के प्रति सदा समर्पित रहते हैं।
- ❑ प्राकृत फाउण्डेशन के निर्देशानुसार ही गतिविधियाँ संचालित करते हैं।
- ❑ किसी भी प्रकार के विवादित विषय पर चर्चा नहीं करते हैं।
- ❑ शिविर के दौरान निर्धारित परिधान कुर्ता-पायजामा ही पहनते हैं।
- ❑ नवीन शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करते हैं।
- ❑ प्रतिदिन शिविर की रिपोर्ट प्राकृत फाउण्डेशन और शिविर संयोजक को प्रदान करते हैं।
- ❑ कक्षा में समय से 5 मिनिट पूर्व पहुँचते हैं।
- ❑ सांस्कृतिक कार्यक्रम पूर्णतया धार्मिकता से जुड़े ही करवाते हैं।
- ❑ प्रतिदिन अभिषेक-देवपूजन अवश्य करें।

समाज के उत्तरदायित्व-

- ❑ विद्वान् के आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था।
- ❑ मंच, माईक और शिविरार्थियों को बैठने की उत्तम व्यवस्था।
- ❑ स्थानीय स्तर पर शिविरार्थियों के लिए प्रोत्साहनार्थ पुरस्कार आदि की व्यवस्था।
- ❑ प्रतिदिवस समाज के पदाधिकारियों का शिविर का अवलोकन और आवश्यकताओं की पूर्ति।
- ❑ प्रभावनार्थ फोटो संग्रहण करना और समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित करवाना।

स्थानीय संयोजक के उत्तरदायित्व-

1. विद्वान् की आवास-भोजन की पूर्ण और सही-सही व्यवस्था करना।
2. शिविर अध्यापन एवं समापन की कम से कम 5 फोटो खिंचवाना एवं उनके पीछे शिविर स्थान, नाम, पता एवं समय अवश्य लिखें।
3. शिविर संयोजक से नियमित सम्पर्क में रहना। प्रतिदिन रात्रि 10 बजे तक जानकारी प्रदान करना।

अध्यापक विद्वान् के आवास की व्यवस्था-

पलंग, गद्दा, चादर, तकिया, चटाई, टेबिल-कुर्सी, कूलर-पंखा, पानी के लिए चरी-जग-गिलास, स्नान के लिए बाल्टी-मग्गा, पानी का छन्ना।

भोजन - मौसम एवं स्वास्थ के अनुकूल।

शिविर उद्घाटन समारोह- प्रारम्भिक व्यवस्थायें - 1. मंच, 2. माईक, 3. भगवान की फोटो, दिगम्बर जैनाचार्य, मुनिराज के चित्र, 4. दीपक, 5. मंगलकलश, 6. तिलक, 7. मौली, 8. बैठक व्यवस्था, 9. माला, 10. श्रीफल।

उद्घाटन कार्यक्रम आयोजना

प्रातः 6.00 बजे से	अभिषेक पूजन
प्रातः 7.30 बजे से	झंडारोहण
प्रातः 7.45 बजे से	चित्रानावरण
प्रातः 7.50 बजे से	दीपप्रज्वलन
प्रातः 7.55 बजे से	मंगलकलश स्थापना करना।
प्रातः 8.00 बजे से	मंगलाचरण।
प्रातः 8.10 बजे से	समाज द्वारा विद्वान् का स्वागत एवं सम्मान।
प्रातः 8.20 बजे से	समाज द्वारा शिविर की उपयोगिता पर विचार।
प्रातः 8.40 बजे से	विद्वान् द्वारा शिविर की रूपरेखा बताना।
प्रातः 9.00 बजे से	कक्षायें प्रारम्भ।

नोटः- मंगलकलशादि विराजमान करने हेतु जो भी राशि निश्चित हो वह करना चाहिये जिससे उस राशि का उपयोग शिविर आयोजन हेतु किया जा सके।

शिविर दिनचर्या

प्रातः 5.00 बजे से	प्रार्थना।
प्रातः 5.15 बजे से	ध्यान, योग।
प्रातः 6.45 बजे से	अभिषेक, शांतिधारा, पूजन।
प्रातः 8.30 बजे से	कक्षायें प्रारम्भ।
दोप. 2.00 बजे से	विभिन्न प्रतियोगितायें।
दोप. 3.30 बजे से	कक्षायें प्रारम्भ।
सायं. 7.00 बजे से	आरती एवं भक्ति ।
सायं. 7.30 बजे से	प्रवचन, शंका-समाधान एवं लघु प्रश्नमंच।
सायं. 8.20 बजे से	सांस्कृतिक कार्यक्रम।

स्थानीय समापन समारोह- स्थानीय समाज की क्षमतानुसार रात्रि 8.00 बजे से समापन समारोह का आयोजन करना चाहिए जिसमें-

1. प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान एवं सान्त्वना प्राप्त शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान करना।
2. सान्त्वना पुरस्कार समाज द्वारा स्वयं के निर्णय अनुसार ही किये जायें, तो उत्तम होगा। सभी पुरस्कारों की व्यवस्था स्थानीय समाज की स्वयं की होगी।
3. शिविर कैसा लगा? इसके अनुभव लिखित लेना है (लेखक के नाम पता सहित)।
4. समापन में ली गई एवं शिविर अध्ययन के दौरान ली गई फोटो कम से कम 5 प्रति अवश्य निकलवायें एवं भिजवायें भी।
5. समाज के अध्यक्ष, मंत्री, एवं गणमान्य श्रेष्ठीवर्ग, समाजसेवी, आदि अपने लेटरपैड पर शिविर के सम्बन्ध में गुण-दोष एवं सुझाव लिखकर अवश्य दें।

सांस्कृतिक कार्यक्रम -

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम नैतिक, राष्ट्रीय एवं धार्मिक संस्कारों से सहित ही आयोजित किए जायेंगे।
2. सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य धार्मिक प्रभावना एवं संस्कार प्रदान करना है।
3. कार्यक्रमों का आयोजन भेद-भाव से रहित होना चाहिए।
4. कार्यक्रम स्थानीय महिला मण्डल, बालिका मण्डल, बालक मण्डल आदि के सहयोग से सफल बन सकते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं की सूची

सांस्कृतिक कार्यक्रम	प्रतियोगिता
1. प्रश्नमंच	1. निबन्ध लेखन
2. अन्त्याक्षरी	2. रंगोली
3. एक मिनिट	3. चित्रकला
4. फैंसी ड्रेस	4. दीपक सजाओ
5. जैन आइडल	5. जैन मॉडल बनाओ
6. नाटिका	6. प्रदर्शनी
7. स्पीच इन जैनिज्म	7. जिनवाणी सजाओ
8. नृत्य	8. कलश सजाओ
9. हाउजी	9. फोटो फ्रेमिंग (ग्रुप से)
10. मोनो एक्टिंग	10. अछार सजाओ
11. जैन मॉडलिंग	11. फ्लॉप गेम शो

रचनात्मक गतिविधियाँ

- ❑ शब्द हमारे बोल आपके
- ❑ बूझो तो जाने
- ❑ ऑनलाइन इंटरव्यू
- ❑ हाइकू प्रतियोगिता
- ❑ कवि सम्मेलन
- ❑ हिन्दी है हम वतन
- ❑ संवाद
- ❑ नाम खोजो
- ❑ प्रार्थना बनाओ
- ❑ क्षेत्र परिचय बनाओ
- ❑ हंसी के गुब्बारे
- ❑ कौन बनेगा शिविर शिरोमणि?
- ❑ ऑनलाइन क्विज एण्ड क्वेरी
- ❑ एल्बम मेकिंग कॉम्पीटिशन
- ❑ लोकोक्ति और मुहावरे
- ❑ जो जीता वही चन्द्रगुप्त मौर्य
- ❑ पत्र लेखन भगवान को
- ❑ समाचार पत्र बनाओ
- ❑ स्लोगन बनाओ
- ❑ चित्र बनाओ

शिविर में पढ़ाए जाने वाले विषय-

1. प्राकृत बाल शिक्षा
2. प्राकृत विज्ञान भाग-1
3. प्राकृत विज्ञान भाग-2
4. बालबोध भाग-1
5. बालबोध भाग-2
6. ड्राइंग, पेंटिंग आदि
7. द्रव्यसंग्रह
8. संल्लेखना विज्ञान
9. रयणसार
10. गुणस्थान विज्ञान (गोम्मटसार जीवकाण्ड आधारित)
11. करणानुयोग
12. न्याय/प्राकृत भाषा/ अन्य

परीक्षा आयोजन -

- ❑ शिविर समाप्ति के एक दिन पहले सायंकाल में परीक्षा आयोजन।
- ❑ प्रश्न-पत्र का निर्माण अध्यापक विद्वानों द्वारा पढ़ाए गए विषयों में से ही सावधानी पूर्वक तैयार किए जायेंगे।
- ❑ प्रश्न-पत्रों की फोटो-कॉपी अत्यंत गोपनीयता के साथ करवायी जाए।
- ❑ परीक्षा का समस्त व्यय स्थानीय समाज द्वारा किया जावेगा।

मूल्यांकन -

- ❑ मूल्यांकन सावधानीपूर्वक किया जायेगा।
- ❑ प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त शिविरार्थियों के मूल्यांकन की प्रामाणिकता के लिए स्थानीय संयोजक, अध्यक्ष, मंत्री के हस्ताक्षर कॉपी पर अवश्य कराएं।

- ❑ परिणाम की पारदर्शिता रखी जायेगी।
- ❑ प्रश्न-पत्र, जो विषय पढ़ाया गया है, उसी में से बनाया जायेगा।
- ❑ मॉडल आन्सर अध्यापक विद्वान् अपने पास सुरक्षित रखें।

प्रश्न पत्र का ब्लू प्रिंट - (इसी के आधार पर प्रश्न-तैयार किए जायेंगे)

कुल अंक - 50 **समय** - 1 घंटा

प्रथम प्रश्न - बहुविकल्पी हो। इसमें प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्प होंगे। 8 प्रश्न, 8 अंक

द्वितीय प्रश्न - खाली स्थान भरो। इसमें कोई भी विकल्प नहीं दिया जायेगा। 8 प्रश्न, 8 अंक

तृतीय प्रश्न - जोड़िया बनाईए । 8 प्रश्न, 8 अंक

चतुर्थ प्रश्न - सही/गलत चुनिए। 8 प्रश्न, 8 अंक

पंचम प्रश्न - शब्दार्थ लिखो। 3 प्रश्न, 3 अंक

षष्ठ प्रश्न - एक शब्द में उत्तर दीजिए। 5 प्रश्न, 5 अंक

सप्तम प्रश्न - अपठित गद्यांश या पद्यांश। 5 प्रश्न, 5 अंक

अष्ठम प्रश्न - गाथा/श्लोक/छन्द अर्थ सहित लिखिए। 5 प्रश्न, 5 अंक

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन समिति (रजि.) के उद्देश्य

1. प्राच्य भाषाओं के विकास के माध्यम से किये जा रहे समस्त कार्यों का मूल उद्देश्य भारत देश की सम्प्रभुता, सांस्कृतिक विरासत और संस्कृति के प्रति दृढ़ता के साथ कार्य करना है।
2. शास्त्रीय प्राकृत भाषा के उन्नयन के लिए कार्य करना।
3. भारत के बाहर प्राकृत भाषाओं के प्रयोगों का अन्वेषण करना।
4. प्राच्य भाषाओं के अन्तर्गत आने वाली अन्य भाषाएँ जिनमें संस्कृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषाओं के विकास के लिए कार्य करना।
5. प्राच्य भाषाओं में निबद्ध शिलालेख, पाण्डुलिपियाँ, मूर्ति प्रशस्तियाँ, प्राचीन मंदिर एवं वर्तमान के शिलालेख आदि के सरंक्षण के लिए कार्य करना।
6. प्राकृत सहित प्राच्य भाषाओं के विकास के लिए शोध पत्रिका एवं न्यूज बुलेटिन का प्रकाशन करना।
7. प्राकृत सहित प्राच्य भाषाओं के साहित्य का प्रकाशन करना।
8. प्राकृत भाषा के विकास के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर लगाना एवं लगवाना।
9. प्राकृत भाषाओं के विकास के लिए मासिक संगोष्ठियों राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियाँ, सम्मेलन एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना एवं करवाना।
10. पाण्डुलिपि संरक्षण, संवर्धन एवं सम्पादन के कार्यों को करना एवं करवाना।
11. प्राकृत भाषा में निबद्ध महापुरुषों के आदर्श उपदेशों-आदेशों का प्रचार करना और उनके बताए मार्ग पर चलने हेतु आमजन को प्रेरित करना।
12. प्राकृत भाषा सहित प्राच्य भाषाओं के विकास के लिए पाठशालाओं, शोध संस्थान, विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय की स्थापना करना।
13. प्राकृत सहित प्राच्य भाषाओं के विकास के लिए प्रदर्शनी एवं पुस्तक मेला का आयोजन करना।
14. प्राकृत भाषा के विकास के लिए श्रेष्ठ कार्य करने वालों के लिए पुरस्कारों की स्थापना करना, पुरस्कार एवं उपाधियाँ प्रदान करना।

15. प्राकृत की विविध भाषाओं यथा – शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी, महाराष्ट्री, पैशाची आदि समस्त भाषाओं का अध्ययन, अध्यापन एवं शोध कार्य करना।
16. प्राकृत सहित प्राच्य भाषाओं में निहित पर्यावरण संरक्षण के उपाय, स्वास्थ्य, प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के उपाय एवं तदनुरूप कार्य करना।
17. प्राकृत सहित प्राच्य विद्याओं के प्रति समर्पित विद्वान्, साधु एवं श्रेष्ठीवर्ग के अभिनंदन ग्रन्थ का प्रकाशन करना।
18. प्राकृत भाषाओं के अध्ययन हेतु प्रोत्साहन के निमित्त अध्येत्तावृत्तियों (छात्रवृत्ति) की व्यवस्था करना।
19. प्राकृत भाषाओं से संबंधित प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना और करवाना।
20. प्राकृत अध्ययन पाठ्यक्रम का संचालन करना।
21. प्राकृत पाठशालाओं का संचालन एवं संचालित पाठशालाओं का सम्मान करना।
22. प्राकृत भाषा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कार्य करना।
23. प्राकृत भाषा विज्ञान, शिक्षा, ललितकलाओं आदि में प्रायोगिक रूप से उपलब्ध है, उसका अन्वेषण कर प्रस्तुत करना।
24. तकनीकी शिक्षा में प्राकृत भाषा का योगदान प्रकट करना।
25. प्राकृत भाषा में शोधप्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए शोधार्थियों को संसाधन उपलब्ध कराना।
26. प्राकृत भाषा विद्यालय स्तर पर लागू की जा सके, इस संबंध में प्रयास करना।
27. प्राकृत भाषा रोजगारोन्मुखी बन सके इसके लिए सार्थक कार्ययोजना तैयार करना।
28. प्राकृत भाषा के पाठ्यक्रम को बालशिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा से जोड़ना।
29. प्राकृत भाषा की लैब विकसित करना।

30. संग्रहालय की स्थापना करना।
31. कृषि विकास में प्राकृत भाषा के तत्त्वों को प्रकट कर जनसामान्य को उससे परिचित कराना।
32. प्राकृत भाषा में प्रस्फुटित जनकल्याण एवं सामाजिकता के तत्वों को खोजकर जनकल्याण के कार्य करना।
33. प्राकृत भाषा जन-जन की है, जाति-धर्म से इसका कोई संबंध नहीं है, इस पुष्ट अवधारणा को स्पष्ट रूप से सशक्त बनाना।
34. प्राकृत भाषा में निबद्ध महिला शिक्षा, सशक्तिकरण और विविध रोजगारों का अन्वेषण कर कार्य करना।
35. राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सामाजिक त्यौहारों-पर्वों की भारतीय परम्परा का प्रतिष्ठापन प्राकृत भाषा में समाहित है, इसका उद्घाटन करना।
36. प्राकृत ज्ञान परीक्षा का आयोजन करना।
37. भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा शिक्षा, भाषा, संस्कृति आदि के लिए केन्द्रीय/राज्यीय शिक्षा मंत्रालय, केन्द्रीय/राज्यीय संस्कृति मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, कृषि मंत्रालय आदि द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को, मूर्त रूप प्रदान करने में प्राकृत भाषा के पुटों का अन्वेषण कर क्रियान्वयन करना एवं करवाना।
38. प्राकृत संभाषण शिविरों का आयोजन करना।

नोट - उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति में कोई व्यापारिक एवं राजनैतिक लाभ निहित नहीं है।

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन के सदस्यों की सूची

परम संरक्षक – श्री शैलेशभाई सरैया, दाहोद गुजरात

संरक्षक – श्री सान्निध्य पंचोली, सिद्धार्थ नर्सरी, दाहोद, गुजरात

परामर्शक मण्डल –

डॉ. भागचन्द जैन भास्कर नागपुर, प्रो. धर्मचन्द्र जैन कुरुक्षेत्र, डॉ. उदयचन्द्र जैन उदयपुर, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, डॉ. श्रीयांस जैन सिंघई जयपुर, डॉ. जे के उपाध्ये नई दिल्ली, डॉ. नीलम जैन पुणे, डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन टीकमगढ़, पं.श्री विनोद जैन रजवांस, डॉ. अनुपम जैन इंदौर, डॉ. अनिल जैन प्राचार्य जयपुर, डॉ. सनतकुमार जैन जयपुर, डॉ. सुरेखा संजय नरदे सांगली, डॉ. सुषमा गुणवंत कोल्हापुर, प्रो. कमल कुमार जैन पुणे, डॉ. कल्पना जैन दिल्ली।

अध्यक्ष – डॉ. ऋषभचन्द्र जैन फौजदार

उपाध्यक्ष – डॉ. संगीता मेहता इंदौर, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन जयपुर, डॉ. महावीर शास्त्री सोलापुर, डॉ. ज्योतिबाबू जैन उदयपुर

महामंत्री – डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर

कोषाध्यक्ष – पं. श्री अरुण जैन शास्त्री जबलपुर

संयुक्त मंत्री – डॉ. आशीष कुमार जैन बम्हौरी

उपमंत्री – पं. श्री सुनील जैन सुधाकर द्रोणगिरि

प्रकाशन मंत्री – डॉ. शैलेश कुमार जैन बांसवाड़ा

सांस्कृतिक मंत्री – डॉ. राजेश जैन शास्त्री ललितपुर

प्रचार मंत्री – डॉ. ममता जैन पुणे, डॉ. सुरेखा जैन सांगली

कार्यकारिणी सदस्य –

डॉ. सतेन्द्र जैन दमोह, डॉ. (ब्र.) अनिल जैन जयपुर, डॉ. सरोज शाह इंदौर, डॉ. अनुपमा जैन मुंबई, पं. श्री राजकुमार जैन शास्त्री सागर, डॉ. ब्र. समता जैन मारोरा इंदौर, ब्र. विनय जैन प्रतापगढ़, डॉ. राजेंद्र जैन पाटिल श्रवणबेलगोला, डॉ. रमेश शिरहट्टी, मैसूर, डॉ. आशीष जैन शिक्षाचार्य दमोह, डॉ. निर्मल जैन शास्त्री टीकमगढ़, डॉ. बाहुबली जी जैन इंदौर, पं. श्री सुमित जैन शास्त्री कानपुर, पं. श्री राजकुमार जैन शास्त्री दाहोद, डॉ. कोमल जैन कानपुर, डॉ. मनीषा जैन लाडनू।

विशेष आमंत्रित सदस्य –

पं.श्री जयंत जैन सीकर, पं. श्री सुरेश जैन मारौरा इंदौर, श्री सुरेन्द्र जैन प्राचार्य भगवां, पं.श्री पावन जैन दीवान सागर, डॉ. शोभालाल जैन सागर, डॉ. हरिशचन्द्र जैन सागर, पं. श्री जयकुमार जैन दुर्ग, पं. श्री मनोज जैन शास्त्री अहार, ब्र. वीरेन्द्र कुमार जैन हीरापुर, डॉ. सुमत कुमार जैन उदयपुर, डॉ. वर्षा सुनीत कोठारी बारामती, डॉ. संस्कृति जैन कोटा, डॉ. पंकज जैन भोपाल, डॉ. अमित जैन आकाश वाराणसी, पं.श्री मुकेश जैन शास्त्री ललितपुर, डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, पं. श्री विजय जैन शास्त्री शाहगढ़, डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली, डॉ. राजेन्द्र चिंतामणि जैन नागपुर, डॉ. मुकेश जैन विमल इंदौर।

सदस्यगण –

पं. श्री अनिल जैन साहित्याचार्य सागर, पं. श्री राजेश जैन शास्त्री सेसई सागर, पं. श्री सोमचन्द जैन शास्त्री ललितपुर, श्रीमती उमंग जैन जयपुर, पं. श्री जितेन्द्र जैन मडावरा, पं. श्री आशीष जैन शास्त्री सीकर, वीरेन्द्र कुमार जैन टीकमगढ़, डॉ. राजश्री राजन मोहडीकर बावधन, पं. श्री लोकेश जैन शास्त्री गनोड़ा, पं.श्री व्रजेश जैन शास्त्री भगवां, डॉ. अभिषेक जैन दमोह, श्रीमती मीना जैन उदयपुर, सौ. गीतांजलि विजय कुमार सांगली, अनुया शशिकांत ढोडल हिंगाटी, डॉ. सीमा आशीष शहा दौंद, डॉ. रंजना पटोरिया कटनी, जैन जैनेन्द्र नासिक, दीपा सतीश शहा सोलापुर, डॉ. सौ. अल्फा प्रशांत रोकडे यवतमाल, श्रेया श्रेणिक शहा सोलापुर, सौ. चित्रा शहा दौड, कु. हंसी सुराणा दिल्ली, सलोनी कराड़िया खमेरा, विद्वत्श्री अभिषेक कुमार शास्त्री सागर, श्रीमती सोनू जैन उदयपुर, ज्वाला सुरेश उदयपुर, स्वाती जैन कोल्हापुर, सुनीता प्रदीप पाटिल कोल्हापुर, पं. श्री संतोष जैन शास्त्री साढूमल, विद्वत्श्रीनंदन जैन टीकमगढ़, डॉ. संजय जैन सागर, अंकित जैन शास्त्री बम्हौरी, धरणेन्द्र जैन उदयपुर, श्री अर्पित जैन बम्हौरी, आदिनाथ जे. उपाध्याय नरगुंद, राहुल जैन शास्त्री मड़देवरा, सुनील जैन शास्त्री हटा, आनंद जैन शास्त्री रामटौरिया, शुभम जैन शास्त्री बड़ामलहरा, पं.श्री उदयचन्द्र जैन सागर, डॉ. शैलेन्द्र जैन दमोह, डॉ. जयश्री नारायण कोरे, पं.श्री आशीष जैन दुर्ग, पं.श्री अजित जैन शास्त्री एरोरा, श्रीमती अनीता जैन छाया सागर।

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.)

द्वारा आयोजित

प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर
एवं बाल संस्कार शिक्षण शिविर

समाज स्वीकृति फॉर्म

शिविर स्थान का नाम–..... दिनांक–.....

शिविर की निश्चित की गई दिनाँक .....

शिविर स्वीकृति हाँ / नहीं

.....

दिगम्बर जैन समाज के घरों की संख्या .....

समाज के अध्यक्ष का नाम .....

मोबाइल नम्बर .....

समाज के मंत्री का नाम .....

मोबाइल नम्बर .....

दो स्थानीय संयोजकों के नाम 1. .....

मोबाइल नं. .....

2. .....

मोबाइल नं. .....

महिला मंडल की अध्यक्ष का नाम .....

मोबाइल नं. .....

शहर में कितने मंदिर हैं ..... धर्मशाला ..... पाठशाला चलती है .....

स्थानीय विद्वान् या त्यागी व्रती के नाम

1. ..... मोबाइल नं. .....

2. ..... मोबाइल नं. .....

स्थानीय संयोजक एवं सम्पर्क सूत्र– .....

.....

समाज के अध्यक्ष/मंत्री हस्ताक्षर **स्थानीय संयोजक के हस्ताक्षर** **संयोजक के हस्ताक्षर**

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.)

द्वारा आयोजित

प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर

एवं बाल संस्कार शिक्षण शिविर

शिविरार्थी फॉर्म

शिविर स्थान–..... दिनांक–.....

शिविरार्थी का नाम– .....

पिता/पति का नाम– .....

आयु– .....

पता एवं फोन नं.– .....

.....

.....

शिक्षा– .....

विषय

- ☐ प्राकृत बाल शिक्षा
- ☐ प्राकृत विज्ञान भाग– 1
- ☐ प्राकृत विज्ञान भाग– 2
- ☐ द्रव्यसंग्रह
- ☐ गुणस्थान विज्ञान
- ☐ रयणसार
- ☐ बालबोध भाग–1
- ☐ बालबोध भाग–2
- ☐ प्राकृत प्रवेशिका

हस्ताक्षर शिविरार्थी **हस्ताक्षर संयोजक**

नोट– 1. यह आवेदन–पत्र अपने नगर के संयोजक के पास जमा करें।
2. शिविर की सभी गतिविधियों मे भाग लेना अनिवार्य है।
3. शिविर में साहित्य समिति द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्थानीय संयोजक का नाम –.....

मोबाइल नम्बर – .....

Cabinet approves conferring status of Classical Language to Marathi, Pali, Prakrit, Assamese and Bengali languages

Posted On: 03 OCT 2024 8:30PM by PIB Delhi

The Union Cabinet chaired by the Prime Minister Shri Narendra Modi has approved to confer the status of Classical Language to Marathi, Pali, Prakrit, Assamese and Bengali languages. The Classical Languages serve as a custodian of Bharat's profound and ancient cultural heritage, embodying the essence of each community's historical and cultural milestone.

माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमन्त्री भारत सरकार द्वारा
प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा (क्लासिकल लैंग्वेज)
का दर्जा प्रदान किया गया। एतदर्थ हम
उनके प्रति सादर धन्यवाद एवं आभार प्रेषित करते हैं।

प्रकाशक

प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

सागर (म.प्र.)

978-81-986457-9-1